।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

ओ३म् क्रतो स्मर। यजु0 40/15
हे कर्मशील जीव तू ओम् का स्मरण कर।

O the doer of deeds ! Recite & remember the name of God i.e. Om.

वर्ष 36, अंक 28 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 मई, 2013 से रविवार 2 जून, 2013 तक
विक्रमी सम्वत् 2070 दयानन्दाब्द : 189
सृष्टि सम्वत् 1960853114 वार्षिक : 250 रुपये
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
Website:www.thearyasamaj.org पृष्ठ 1 से 8 तक

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में आर्यसमाज रानी बाग दिल्ली में

२१वां वैचारिक क्रान्ति शिविर सम्पन्न

आर्य समाज का स्वयं सेवी संगठन **अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ** के तत्वावधान में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले वैचारिक क्रान्ति शिविर का उद्घाटन 12 मई 2013 को आर्य समाज मन्दिर रानी बाग दिल्ली में सम्पन्न हुआ। यह शिविर 12 से 26 मई, 2013 तक चला। इस राष्ट्रीय शिविर में राष्ट्र के अनेक प्रान्तों असम, नागालैण्ड, त्रिपुरा, मिजोरम, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान एवं दिल्ली के युवक–युवतियों ने भाग लेकर वैदिक धर्म, राष्ट्र गौरव, नैतिक एवं सामाजिक विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का उद्घाटन प्रसिद्ध समाज सेवी

- शेष पृष्ठ 4 पर

(बाएं) दिल्ली विधान सभा के अध्यक्ष डॉ. योगानन्द जी शास्त्री को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करतीं माता प्रेमलता शास्त्री एवं आचार्य जीववर्धन शास्त्री।
(दाएं) महाशय धर्मपाल जी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करती माता प्रमेलता शास्त्री, जोगेन्द्र खट्टर एवं अन्य आर्यजन

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, राजा बाजार में

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षण प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

कन्याओं के प्रशिक्षण से भविष्य में अच्छे परिवारों का निर्माण सम्भव – ब्र. राजसिंह आर्य

आर्य वीरांगनाएं अपनी शक्ति सृजनात्मक कार्यों में लगाएं। बचपन के संस्कार भी महिला के सर्वांगीण विकास में सहायक हैं। ये उद्गार श्रीमती शशि प्रभा आर्या, प्रधाना, प्रान्तीय आर्य महिला सभा ने रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल राजा बाजार नई दिल्ली में आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश द्वारा आयोजित प्रान्तीय चरित्र निर्माण आत्म रक्षण शिविर के समापन समारोह में व्यक्त किए। इस शिविर में 160 आर्य वीरांगनाओं को

- शेष पृष्ठ 4 पर

वेद-स्वाध्याय

अकर्मा दस्यु

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

अकर्मा दस्युरभि नो अमन्तुरन्यव्रतो अमानुषः त्वं तस्यमित्रहवधर्दासस्य दम्भय।। ऋ0 10/22/8

अर्थ – *(**अकर्मा**)* उत्तम कर्म, पुरुषार्थ न करने वाला *(**दस्युः**)* अच्छे कर्मों के बाधक होने से दस्यु है। *(**अन्यव्रतः**)* उसके कर्म अधर्म युक्त हैं *(**अमन्तु**)* दूसरों का अपमान करने वाला, उद्दण्ड, *(**अमानुषः**)* आसुरी स्वभाव वाला है, हे राजन्! *(**त्वम् अमित्रहन्**)* आप शत्रुओं को दण्ड देने वाले हो अतः *(**तस्य दासस्य**)* उस नीच जन को *(**वधः**)* दण्डित कर *(**दम्भय**)* नष्ट कीजिए।

संसार में अच्छे और बुरे ये दो प्रकार के मनुष्य सदा ही रहते आए हैं। इन्हीं को देव–असुर और आर्य–दस्यु कहते हैं। श्रेष्ठ व्यक्ति का नाम आर्य और दूसरों के काम में रोड़ा अटकाने वाले या मर्यादा विहीन व्यक्ति को दस्यु कहते हैं। राजा का यह कर्त्तव्य है कि इन लोगों की पहचानकर दस्युओं को दण्ड दे तभी अच्छे लोग सत्कर्मों को करने में रूचि लेंगे। जब विश्वामित्र के यज्ञ कें राक्षसों ने विघ्न, उत्पात मचाना शुरु कर दिया तब वे राम–लक्ष्मण को यज्ञ की रक्षा करने के लिए लेकर गए और उनसे रक्षित हो अपना यज्ञ पूरा कर पाए।

दस्यु किसी वर्ग विशेष का नाम नहीं है अपितु चारों वर्णों में यह देखने में आते हैं जैसा कि महाभारत शान्तिपर्व में कहा है –

दृष्यन्ते मानुषे लोके सर्ववर्णेषु दस्यवः। लिंगान्तरे वर्तमाना आश्रमेषु चतुर्ष्वपि।। (महा. शा. 65/21)

सभी वर्णों और चारो आश्रमों में भी दस्यु अर्थात् डाकू और लुटेरे देखे जाते हैं जो विभिन्न वेशभूषाओं में अपने को छिपाए रखते हैं। जब राजा की दुष्टता या शिथिलता के कारण दण्डनीति नष्ट हो जाती है और राजधर्म तिरस्कृत हो जाता है तब सभी लोग मोहवश कर्त्तव्य और कर्त्तव्य का विवेक खो बैठते हैं। ये लोग साधुओं का वेश बनाकर अपने को सिद्ध प्रसिद्ध कर लोगों को अपने जाल में फंसा उनके धन का अपहरण करते हैं। दूसरों को त्याग का उपदेश देते हैं, और अपने आप मौज–मस्ती करते हैं। ये सब संन्यास के वेश में दस्यु जानने चाहिए।

कुछ लोग तिलक लगाकर, छाप, कण्ठी माला धारण कर पिण्डदान, श्राद्ध, तर्पण, ग्रह विमुक्ति, पुरश्चरण, अनुष्ठान, भूत, प्रेत, का भय दिखाकर लोगों की धार्मिक भावनाओं का शोषण करते हैं। ये लोग ब्राह्मण वर्ण को कलंकित करने वाले दस्यु हैं।

आजकल ऐसे लोागें की कमी नहीं है जो लाटरी, सट्टा, अनेक योजनाओं की घोषणा कर लोगों से धन ऐंठते हैं। नकली को असली बताकर लोगों को ठगते हैं। इनके काले कारनामों की गणना करना भी कठिन है। ये वैश्य वर्ण को अपयश दिलाने वाले दस्यु हैं।

ऐसे ही बाहुबल के आधार पर किसी व्यक्ति या उसके बच्चों का अपहरण कर फिरौती मांगना, डाका डालना, लूट लेना, घर बैठे दुकानों से धन वसूलना क्षात्र धर्म को बदनाम करने वाला दस्यु के समान कर्म जानना चाहिए।

इनके अपराध को रोकने के लिए मन्त्र कहता है – **त्वं तस्याऽमित्रहन् वधर्दासस्य दम्भय** हे राजन! आप इन दस्युओं से मुक्ति दिलाने के लिए इन्हें दण्ड देकर नष्ट कीजिए। राजा की शिथिलता से ही समाज और राष्ट्र में दस्यु पनपते हैं, जो अनेक रूप धारण कर अथवा सुनहरे सपने दिखा, कई गुणा धन बढ़ाने का प्रलोभन देकर प्रजा का धन हरण करते हैं। वेद की दृष्टि में अकर्मा दस्युः जो पुरुषार्थ या मेहनत की कमाई नहीं खाता वह दस्यु है। अपने वर्ण या आश्रम के अनुसार कर्म नहीं कर छल–कपट या ढोंग–आडम्बर द्वारा मुफ्त का खाता है उसे दस्यु ही कहा जाएगा चाहे वह कितने ही बड़े पद पर अधिष्ठित है। जब वेद ने **कुर्वन्नेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः** (यजु0 40/2) सौ वर्ष तक कर्म करते हुए जीने का आदेश दिया है तो इस आज्ञा का उल्लंघन करने वाला दस्यु नहीं हो फिर क्या है?

दस्यु का दूसरा लक्षण है **अभि नो अमन्तुः** अमन्तु का अभिप्राय अमर्यादित, उद्दण्ड या अविनीत से है। जिसे शिष्टाचार एवं समाज की मार्यादाओं का ज्ञान नहीं है, जो यज्ञादि की खिल्ली उड़ाता है। बड़ों का अपमान करने में तनिक भी संकोच नहीं करता तथा अन्यव्रतः उसके कर्म अधर्मयुक्त हैं। सत्य, अहिंसा, न्याय, परोपकार में जिसे विश्वास नहीं है। येन–केन–प्रकारेण धन ऐंठना ही जिसका कार्य है तथा अमानुषः जिसका जीवन पशु के समान हो गया है। खाना, सोना निर्बल को भयभीत करना और बच्चे उत्पन्न करना ही जिसका काम है, इन सब दुर्गुणों वाले को अर्थात् दूसरों के काम में रोड़ा अटकाना ही जिन्हें अच्छा लगता है, दस्यु कहते हैं। ऋग्वेद के आठवें मंडल में इसे और स्पष्ट किया है –

अन्यव्रतममानुषमयज्वानमदेवयुम्। अव स्वः सचा दुधुवीत पर्वतः सुघ्नाय दस्युं पर्वत।। ऋ0 8/70/11

प्रजा का मित्र, पालक राजा (***अन्यव्रतम्***) शत्रु के समान आचरण करने वाले *(**अमानुषम्**)* मनुष्यों से भिन्न पशुवत् आचरण जिनका है *(**अयज्वान्**)* अदानशील *(**अदेवयुम्**)* जो दान देने वाले, विद्वान् या उत्तम पुरुष को देखना भी नहीं चाहता ऐसे दस्यु स्वभाव पुरुष को *(**पर्वतः**)* पर्वत के समान अचल होकर *(**सुघ्नाय**)* अच्छी प्रकार दण्ड देने के लिए *(**दस्युम्**)* दुष्ट पुरुष को *(**स्वः**)* सुख पूर्वक अर्थात् उसके मारने में पुण्य है, पाप नहीं, यह विचार कर *(**दुधुवीत**)* कम्पा कर उसे भूमि पर गिरा दे, दण्डित करे।

राजा का यह कर्त्तव्य है कि उन्हें दण्डित करे और उन्हें सन्मार्ग पर लाने का उपाय करे जैसा कि कहा है – ***यया दासान्यार्यणि वृत्रा करोः*** (ऋ0 6/22/10) दस्यु कीह बुद्धि को सद्बुद्धि में बदलकर आर्य बनाओ क्योंकि आर्य में ही बल और बुद्धि की प्रधानता होती है, अनार्य या दस्यु में यह प्रवृत्ति देखने में नहीं आती। जहां कहीं पर विनम्रता से ही काम चल जाता है तो वहां उसी का प्रयोग करना उचित है। *– क्रमशः*

राव कर्णसिंह की कृपाण के टुकड़े-टुकड़े

गतांक से आगे

ऋषि बोले– 'तब पुरखाओं के, भर रहे स्वांग अति पातक जन।
तुम बैठे देखो लाजहीन, हैरानी! तुम क्षत्रिय राजन।।
भर स्वांग मात–पितु का नाचें, तो कितना बुरा लगे हमको।
तुम से कुलीन, महापुरुष–स्वांग रच, उन्हें नचा होते प्रसन्न।।
करते निन्दा अवतारों की, गंगा का करते नहीं मान।
मुझ राव कर्णसिंह के आगे, निन्दा की तो मैं हरूं प्राण।।
ऋषि बोले– 'जैसी है वस्तु, मैं यथातथ्य कह देता हूं।
गंगा जैसी, जितनी भी है, मैं करता वैसा ही बखान।।
कहा राव– 'बता गंगा कितनी', ऋषि उठा कमण्डल हुए मुखर।
जल है इतना पर्याप्त मुझे, इतनी ही है यह गंग–लहर।।
बोले फिर राव कर्ण सिंह भी– 'गंगा गंगेति श्लोक में।
कर नाम–कीर्तन–दर्शन से, गंगा पापों को लेती हर।।
बोले ऋषि– 'श्लोक स्वकल्पित है, महिमा वर्णन सब गप्प कथन।
होता है मोक्ष तब ही, वेदानुकूल हो चाल–चलन'।।
ऋषि बोले राव कर्णसिंह से – 'तब भाल खिंचित रेखा है क्या'?
बोले श्रीराव– यह है 'श्री', जो नहीं करे इसको धारण–
कहलाता है चाण्डाल वह, ऋषि बोले– 'कब से हो वैष्णव'।
बोला वह– 'कुछ ही वर्षों से', 'क्या पिता तुम्हारे थे वैष्णव।।
वह बोला– 'वह तो नहीं हुए', ऋषि बोले तब कथनानुसार–
तब पिता, और कुछ वर्ष पूर्व, तुम भी तो थे चाण्डाल सर्व।।
सुन राव कर्ण सिह हुए कुपित, बोले निज खड्ग हाथ लेकर।
'बोलो निज गिरा संमाल सन्त', थे शस्त्र सुसज्जित दर्जन चर।।
थे टीकाराम सुभीत बहुत, ऋषि बोले– 'डरते क्यों प्रियवर'।
हमने जो कहा सत्य ही है, मत किसी बात की करो फिकर।।

– क्रमशः (श्री भगवानदास जी द्वारा रचित 'दयानन्द सागर' महाकाव्य से साभार)

सार्वदेशिक आर्यवीर दल एवं सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में

आर्य वीर दल राष्ट्रीय शिविर

03 जून से 16 जून 2013

इस शिविर में आर्यवीर, शाखा नायक, उपनायक शिक्षक, व्यायाम शिक्षक एवं आचार्य श्रेणी का शारीरिक,बौद्धिक तथा व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण योग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। प्रवेश शुल्क इस प्रकार है– **आर्य वीर** 250 /– रुपये, **शाखा नायक** 300 /– रुपये, **उपव्यायाम शिक्षक** 400/– रुपये, **व्यायाम शिक्षक एवं आचार्य** 500/–रुपये। इस शुल्क में पाठ्यपुस्तकों का मूल्य भी सम्मिलित है।

शिविरार्थियों के लिए आवश्यक सामान एवं निर्देश: गणवेश : सफेद शर्ट, खाकी हॉफ पेन्ट, सफेद मौजे, सफेद जूते, सैन्डो बनियान, लंगोट, लाठी, नोटबुक, पेन, हल्का बिस्तर तथा दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएँ। आर्य वीर दल अथवा आर्यसमाज के अधिकारी का सन्तुति पत्र तथा उत्तीर्ण श्रेणी प्रमाणपत्र की प्रति साथ लाएँ। अनुशासनहीन शिविरार्थियों को शिविर से पृथक भी किया जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षिका प्रशिक्षण शिविर

16 जून से 23 जून 2013

इस शिविर के माध्यम से कन्याओं को शारीरिक एवं बौद्धिक विकास, राष्ट्रीय चेतना, अनुशासित जीवन, आत्मरक्षण, शस्त्र प्रशिक्षण, संगीत एवं वैदिक संस्कृति के प्रति निष्ठा उत्पन्न कर शिक्षिका बनाना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है। शिविर शुल्क प्रति शिविरार्थी **350/– रुपये** होगा। पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जाएंगी। शिविरार्थी 6 जून तक नामांकन करा लें तथा 15 जून की शाम तक पहुंच जाएं।

शिविरार्थियों के लिए आवश्यक सामान एवं निर्देश: गणवेश : दो जोड़ी सफेद सलवार कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद मौजे, सफेद पी.टी. जूते, एवं पहनने के उचित कपड़े, टार्च, लाठी, नोटबुक, पेन, मग, साबुन, हल्का बिस्तर साथ लाएं। कोई कीमती सामान न लाएं। शिविरार्थी की न्यूनतम आयु 15 वर्ष व शैक्षणिक योग्यता नवीं पास है। जिन वीरांगनाओं ने पहले 2–3 शिविर किए हों वे भाग सकती हैं।

निदेशक

आचार्य देवव्रत	नन्दकिशोर शास्त्री	प्रो. राजेन्द्र विद्यालंकार	स्वामी देवव्रत सरस्वती	साध्वी डॉ. उत्तमा यति	मृदुला चौहान
प्रधान	प्रधान व्यायाम शिक्षक	महामन्त्री	प्रधान संचालक	प्रधान संचालिका	संचालिका
गुरुकुल कुरुक्षेत्र (9416038142)	(09466436220)	**सार्वदेशिक आर्य वीर दल** (09215226571)	(09868620631)	**सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल** (09672286863)	(09810702762)

पहुंचने का मार्ग : 1. दिल्ली अम्बाला मार्ग से आने वाले शिविरार्थी पिपली बस स्टाप पर उतरकर लोकल बस अथवा टैम्पो द्वारा युनिवर्सिटी थर्ड गेट पर उतरें।
2. कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से उतरकर टैम्पो द्वारा गुरुकुल कुरुक्षेत्र पहुँचें।

आर्य वीर दल द्वारा प्रान्तीय स्तर पर आयोजित अन्य ग्रीष्म कालीन शिविर

प्रान्त	तिथि	शिविर का नाम	स्थान
उत्तराखण्ड राज्य	03 जून से 09 जून, 2013 तक	आर्य वीर शारीरिक प्रशिक्षण शिविर	रुहालकी हरिद्वार
	23 जून से 30 जून, 2013 तक	आर्य वीर चरित्र निर्माण एवं शारीरिक प्रशिक्षण शिविर	आर्य गुरुकुल पौन्धा (देहरादून)
आन्ध्र प्रदेश	01 जून से 10 जून, 2013 तक	आर्य वीर चरित्र निर्माण एवं शारीरिक प्रशिक्षण शिविर	गुटटूर, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)
हरियाणा राज्य	02 जून से 09 जून, 2013 तक	आर्य वीरागना दल शिविर	आर्य पब्लिक स्कूल सै. 4 गुड़गांव
	03 जून से 09 जून, 2013 तक	आर्य वीर दल शिविर	दयानन्द मठ, रोहतक

सभी आर्यजन अपने-अपने प्रान्त में बच्चों को प्रशिक्षण शिविर में अवश्य ही भेजें।

इन शिविरों के उद्घाटन एवं समापन समारोह में आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर आर्यसमाज की युवा पीढ़ी को अपना आशीर्वाद प्रदान करके उत्साहवर्धन करें।

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपनी मोबाइल ट्यून (CallerTunes)

आर्यसमाज के गीतों को अपनी मोबाइल ट्यून बनाने के लिए आज ही डाउनलॉड करें और अन्य महानुभावों को भी प्रेरित करें।

Sr.	Song Title	Voda	Idea	Airtel	Tata CDMA	Tata Doco	BSNL (North)	MTS
1	आई फौज दयानन्द वाली	10444132	720080	543211007382	376609	254930	173340	77772509
2	ये प्रभु हम तुम से	10444133	720084	543211007383	376614	254931	173341	77772510
3	होता है सारे देश का	10444134	720081	543211007384	376615	254932	173342	77772511
4	हम को सब दुनिया जाने	10444135	720082	543211007385	376616	254933	173343	
5	जो होली सो होली	10444136	720090	543211007386	376622	254934	173344	77772512
6	पूजनीय प्रभु हमारे	10444137	720105	543211007387	376629	255260	173345	77772513
7	सुनो-सुनो ये दुनिया वालो	10444138	720115	543211007388	376639	254935	173346	77772514
8	यूँ तो कितने ही महापुरुष	10444139	720111	543211007389	376644	254936	173347	77772515
9	दिल्ली चलो (सम्मेलन गीत)			543211462723			1721306	

Voda- SMS "CT code"send to 56789 Idea- SMS "DT Code"send to 55456 Airtel- Dial Code and Say " YES" Tata cdma- SMS "Wtcode" send to 12800 Tata docomo- SMS "CT code" to 543211 BSNL- SMS "BT code" send to 56700 MTS- SMS "CT code" send to55777

उदाहरण के तौर पर आपके पास प्कमं का कनेक्शन है और आप "Aai Fauj Dayaanand Wali" गीत की धुन अपने Idea मोबाईल पर कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं, तो आप गीत के DT 720080 को टाईप कर इस नंबर 55456 पर एसएमएस करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ का २१वां वैचारिक क्रान्ति शिविर .....

उद्योगपति मसाला किंग महाशय धर्मपाल जी MDH ने किया। शिविर में 19 मई 2013 को सभी शिविरार्थियों को यज्ञोपवीत पहनाकर संकल्प दिलाया गया कि वे माता–पिता–गुरु, राष्ट्र एवं देवों के सदैव ऋणी रहेंगें तथा उनके प्रति कर्त्तव्यरत रहेंगे।

संकल्प समारोह में अनेक गणमान्य जन सर्वश्री आजाद सिंह वर्मा– महापौर उत्तरी दिल्ली, विजेन्द्र गुप्ता–भाजपा, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री–सचिव दिल्ली संस्कृत अकादमी, विनय आर्य–महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सुरेन्द्र आर्य– प्रधान वेद प्रचार मण्डल उ.प्र.दिल्ली, उषाकिरण आर्या–उप प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा आदि महानुभावों ने पधारकर शिविरार्थियों को अपना आशीष दिया।

प्रातः 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक कठोर तपस्वी जीवनचर्या से शिविरार्थी अपने जीवन को कुन्दन बनाकर समाज एवं राष्ट्र के सुयोग्य नागरिक बनने की प्रक्रिया में हैं।

शिविर की अध्यक्षा माता प्रेमलता शास्त्री नित्य शिविरार्थियों को प्रतिदिन देश, धर्म और यज्ञ विषय पर सम्बोधित करती रहीं। शिविर का समापन 26 मई 2013 को हुआ। इस शिविर में पधारने पर दिल्ली विधान सभा अध्यक्ष डॉ. योगानन्द जी शास्त्री जी एवं उत्तरी दिल्ली के महापौर श्री आजाद सिंह वर्मा जी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

– जोगेन्द्र खट्टर, मन्त्री

शिविर में पधारने पर उत्तरी दिल्ली के महापौर श्री आजाद सिंह वर्मा जी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते दयानन्द सेवाश्रम संघ के अधिकारी एवं अतिथिगण तथा शिविर में विभिन्न प्रान्तों के आदिवासी क्षेत्रों से पधारे शिविरार्थी एवं कार्यकर्ता।

क्रान्ति शिविर के समापन समारोह में पधारे अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ दयानन्द सेवाश्रम संघ के अधिकारीगण।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान में

स्वाध्याय शिविर

दिनांक 25 से 28 जून, 2013

गुरुकुल पौंधा, देहरादून

प्रस्थान : 24 जून रात्रि 10 बजे

वापसी : 29 जून प्रातःकाल

स्वाध्याय शिविर का संचालन स्वामी अमृतानन्द जी के सान्निध्य में किया जाएगा। शिविर के उपरान्त लक्ष्मण झूला, ऋषिकेश, हरिद्वार आदि स्थानों भ्रमण का भी कार्यक्रम रहेगा। स्थान सीमित हैं। भाग लेने के इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें।

श्री ओमप्रकाश आर्य (9540077858)

श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175)

प्रथम पृष्ठ का शेष

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षण शिविर.....

योग, प्राणायाम, लाठी, तलवार, संगीत, जूड़ो–कराटे, आत्म रक्षण व बौद्धिक ज्ञान का प्रशिक्षण दिया गया। समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती ज्योति गुलाटी (निदेशक, एम.डी.एच.) ने प्रतिभाशाली शिविरार्थी आर्य वीरांगनाओं को पुरस्कृत किया।

आर्य वीरांगना दल दिल्ली की संचालिका डॉ. सुनीति आर्या ने कहा कि आज महिलाएं घर व बाहर सुरक्षित नहीं हैं। विदेशी संस्कृति के प्रभाव में युवा पीढ़ी भटक रही है। शिविर के माध्यम से युवा शक्ति को संस्कारित किया जा सकता है।

दल की महामन्त्री सुश्री लिपिका आर्य ने शिविर की सफलता के लिए विद्यालय के अधिकारियों, सहयोगियों सर्वश्री राजीव आर्य, संजय कुमार, कर्नल रविन्द्र वर्मा, नरेन्द्र सिंह हुड्डा, श्रीमती तृप्ता शर्मा एवं श्रीमती उषा रेहानी तथा शिक्षक वर्ग एवं अन्य स्टाफ का धन्यवाद किया। शिविर के समापन एवं दीक्षान्त समारोह में डॉ. उमाशशि दुर्गा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, साध्वी सुमेधा दर्शनाचार्या, श्रीमती शारदा आर्या एवं विद्यालय के प्रबन्धक कर्नल रवीन्द्र कुमार वर्मा ने भी प्रेरक विचार रखे।

– चन्द्र मोहन आर्य, पत्रकार

आवश्यकता है

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ नई दिल्ली के अन्तर्गत नव निर्मित विद्यालय **'महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन,** बामनिया, जिला– झाबुआ (म.प्र.) हेतु प्रधानाचार्या एवं सभी विषयों के लिए योग्य अध्यापकों की आवश्यकता है। इच्छुक अभ्यार्थी अपना सम्पूर्ण विवरण सहित प्रार्थना पत्र निम्न पते पर भेजें। बामनिया क्षेत्र के आसपास रहने वाले उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जाएगी।

– माता प्रेमलता शास्त्री

मन्त्री, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

आर्यसमाज रानी बाग, मेन बाजार, दिल्ली–110024

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के नव निर्वाचित कुलाधिपति

डॉ. रामप्रकाश जी का भव्य अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

– वेदवाचस्पति प्रो. सत्यदेव निगमालंकार

20 मई, 2013 का दिन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलाधिपतिविषयक शृंखला में एक नई कड़ी को जोड़ने वाला इतिहास बना, जब तंगौर ग्राम, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के निवासी प्रसिद्ध आर्यसमाजी पिता श्री प्रभुदयाल और गौमाता के प्राणों की रक्षा के लिए गोरक्षा आन्दोलन मे तिहाड जेल तक जाने वाली माता श्रीमती शान्ति देवी की कोख से 5 अक्तूबर 1939 को जन्म ग्रहण करने वाले महान् शिक्षाविद्, यज्ञैकनिष्ठ, भारतीय पुरुषों के चरित्र के निज जीवन में आचरण करने वाले, प्रख्यात वैज्ञानिक सरल–सुन्दर–स्पष्ट–मधुरवक्ता, अदम्य पुरुषार्थी डॉ. रामप्रकाश जी को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई मीटिंग के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभाओं के द्वारा चयनित श्रेष्ठ तथा विशिष्ट महानुभावों द्वारा कुलाधिपति पद पर अलंकृत किया गया। आपको पूर्वजन्म–जन्मान्तरों के पुण्यकर्मों से ऐसे माता–पिता के घर के प्रांगण में शिशुक्रीड़ा करने का शुभावसर उपलब्ध हुआ, जिनकी पंचमहायज्ञों में दृढ़ आस्था रही, सत्य बोलना तथा धर्म का आचरण करना, जिनके जीवन की प्रतिज्ञा रही, जिन्होंने परमात्मा के अस्तित्व को ब्रह्मयज्ञ के माध्यम से, दिव्य भावनाओं से ओत–प्रोत देवत्व की अवधारणा को देवयज्ञ के द्वारा, जीवित माता–पिता की भोजन, वस्त्र–मधुरवाणी–औषध अदि से सेवा–सुश्रुषा पितृयज्ञ के कर्म से, विद्वान् अतिथियों का आदर–सत्कार अतिथि यज्ञ से और कुत्ते–पतितजन–श्वपाची– पापी–रोगी–कौए–कृमियों को बलि–बलिवैश्व यज्ञ के माध्यम से अहर्निश करने में कभी प्रमाद नहीं किया। ऐसे पुण्यकर्मा और श्रेष्ठधर्मा पितरों के स्वच्छ हृदय से निःसृत आशीर्वादरूपी कवच को पाकर आप पले और धीरे–धीरे प्रारम्भिकी शिक्षा की ओर बढ़े। उनके आन्तरिक आशीष ने आपके अन्दर विद्या प्राप्ति की ऐसी ज्ञान–ज्योति को प्रज्वलित किया कि आप मां सरस्वती के आराधना मन्दिर में नित्य–प्रकाश के साथ जगत् में घनघोर अंधकार होने पर भी उन्नति के पथ पर आगे बढ़ते चले गए। सैंकड़ो बाधाओं के द्वारा मार्ग अवरुद्ध किए जाने पर और अचिन्तनीय चिन्ताओं से घिरे जाने पर भी आपने कभी धैर्य का परित्याग नहीं किया तथा धर्म के धृति–क्षमा–दमन–अस्तेय–शौच– इन्द्रियनिग्रह –धी–विद्या–सत्य–अक्रोध इन दस लक्षणों का अवलम्बन लेकर आपने अम्बाला नगर के डी.ए.वी. कॉलेज से बी.एस.सी. तथा चण्डीगढ़ स्थित पंजाब विश्वविद्यालय के रसायन विभाग से एम.एस.सी. (आनर्स) परीक्षा परिश्रमपूर्वक प्रशंसनीय श्रेणी प्राप्त कर उत्तीर्ण की। इसी विश्वविद्यालय ने शिक्षा की उच्च उपाधि पी.एच.डी. और जी.जे. विश्वविद्यालय हिसार से सर्वोच्च मानद उपाधि डी.एस.सी.से आपको समलंकृत किया।

छात्रावस्था से ही आप कठोर परिश्रम, प्राध्यापकों के प्रति सद्व्यवहार, विद्यावान् होने पर भी विनम्रता इत्यादि अनेक गुणों ने आपको इस योग्य बना दिया कि पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के रसायनविज्ञान के प्रवक्ता पद से लेकर रीडर एवं पुनः प्रोफेसर पद तक अध्ययन– अध्यापन एवं शोध के माध्यम से आपने शैक्षणिकयात्रा के कार्य में योगदान दिया। इसी कालखण्ड के मध्य में आपके अन्दर प्रशासनिक क्षमता उभर कर आई, इसीलिए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने अपनी आन्तरिक शिक्षा–सम्बन्धी व्यवस्था और अधिक उन्नत करने के लिए आपको प्रो. वाइस चांसलर पद पर नियुक्त करने में अपना गौरव समझा।

शोध के प्रति आपकी अभिरुचि प्रारम्भ से ही थी, कुछ नया करना आपका लक्ष्य बन चुका था। इसी कारण से जहां आपने मां सरस्वती के मन्दिर में वेद विमर्श, यज्ञ विमर्श, सत्यार्थ प्रकाश विमर्श, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी (जीवन एवं कार्य), गुरु विरजानन्द दण्डी (जीवन एवं दर्शन) इत्यादि सद्ग्रन्थ रूपी दीपकों के प्रकाश से जगत को आलोकित किया, वहीं 90से अधिक मौलिक, वैज्ञानिक शोध पत्र लिखकर शोध को नूतन दशा एवं दिशा प्रदान कर शोधक्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया। इसी शोधात्मक प्रवृत्ति ने आपके अन्दर वे भावनाएं जागृत की कि जिनसे आपने पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में दयानन्द चेयर की स्थापना के साथ–साथ रसायन विभाग के भवन का नाम महान वैज्ञानिक आर्यसमाज और महर्षि दयरनन्द के भक्त, अपूर्व सिद्धान्तवादी, धुन के धनी पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के नाम पर 'पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी भवन' नाम रखवाया। शोध की तथा आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार की प्रवृत्ति ने ही आपको चैकोस्लोवाकिया, आस्ट्रिया, हंगरी, इंगलैण्ड, जर्मनी, स्विट्जरलैण्ड, फ्रांस, बैलजियम, रोमानिया, नीदरलैण्ड, यूगोस्लाबिया, कनाड़ा, अमेरिका मॉरीशस, नैरोबी, थाईलैण्ड, इत्यादि देश–विदेशों की यात्रा के लिए प्रोत्साहित किया।

आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रभावित होकर आपको विद्यामार्तण्ड स्वामी धर्मानन्द सरस्वती आर्यभिक्षु पुरस्कार ज्वालापुर, घूड़मल प्रह्लाद कुमार आर्य साहित्य पुरस्कार हिण्डौन सिटी, हरियाणा रत्न वेद वेदांग पुरस्कार आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई, आर्यसमाज भुवनेश्वर आदि विभिन्न संस्थाओं ने सम्मानित कर गौरव का अनुभव किया। इसी के साथ–साथ आपका राज्यमन्त्री–हरियाणा सरकार, सदस्य हरियाणा विधान सभा, सीनेटर तथा सिण्डीकेटर पंजाब विश्व विद्यालय, अध्यक्ष पंजाब विश्व विद्यलय शिक्षक संघ इत्यादि विभिन्न पदों पर महत्वपूर्ण योगदान रहा। वर्तमान में आप राज्य सभा सदस्य के पद पर रहते हुए समाज को अपनी ओजस्विनी वाणी से वैदिक धर्म और वैदिक राजनीति का मार्ग दिखा रहे हैं, जिससे यह राष्ट्र सुख और शान्ति की छाया में विश्राम कर सके।

ऐसे वैभवशाली व्यक्तित्व के धनी डॉ. रामप्रकाश जी के सद्व्यवहार, गौरव गाम्भीर्य, मृदुभाषण, निश्छल जीवनशैली, विनम्रता भरा वैदुष्य, अबाध गति से सम्पन्न कर्मठता, अहर्निश का जुझारूपन, तन–मन–धन से लग्नशीलता, आर्य समाज, महर्षि दयानन्द तथा वेदों के प्रति निष्ठा इत्यादि विशद गुणों का अवलोकन कर इन्हें गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सर्वोच्च कुलाधिपति के पद पर अलंकृत किया गया है। इसी उपलक्ष्य में 21 मई, 2013 को गुरुकुल कांगड़ी के पर्यावरण विज्ञान विभाग में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र0 राजसिंह आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं सदस्यों के मध्य और विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी, छात्र तथा समाज के प्रतिष्ठित जनों की उपस्थिति में गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के कुलपति जी की अध्यक्षता तथा कुल सचिव जी के संयोजकत्व में आपका सैंकड़ों पुष्पमालाओं को पहनाकर शाल भेंटकर तथा देवभाषा संस्कृत में विनिर्मित 'अभिनन्दन–पत्र' वाचन कर भव्य अभिनन्दन समारोह किया गया।

– अध्यक्ष, श्र. वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आर्य विद्या परिषद दिल्ली द्वारा कविता पाठ प्रतियोगिता

आर्य विद्या परिषद दिल्ली की ओर से 8 मई, को कविता पाठ प्रतियोगिता आर्यसमाज बिडला लाइन्स में सम्पन्न हुई, जिसमें आर्यसमाज के विभिन्न स्कूलों ने भाग लिया। सभी वर्गों के बच्चों ने देशभक्ति व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी पर आधारित कविताओं द्वारा वातावरण को गुंजायमान किया। प्रधान श्री योगेश आर्य जी, प्रधानाचार्या श्रीमती सुनीता खुराना, क्षेत्रीय निगम पार्षद श्रीमती सुखविन्दर गर्ग ने बच्चों को सम्बोधित किया। जज के रूप में श्री राजीव मित्तल जी श्रीमती अंजू घई मृदुल गुप्ता उपस्थित थे। सभी प्रतिभागी बच्चों को महर्षि दयानन्द और उनके क्रान्तिकारी शिष्य कॉमिक्स तथा प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए।

– सरोज यादव, संयोजिका

आर्य वीर दल/वीरांगना दल एवं अन्य शिविरों में भाग लेने वाले युवाओं एवं बच्चों के लिए विशेष कॉमिक्स एवं साहित्य

अधिकाधिक संख्या में मंगाकर वितरण करें एवं आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में सहयोग करें

बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश

वह सन्तान बड़ी भाग्यशाली है जिसके माता–पिता धार्मिक विद्वान् हों। अतः माता–पिता का सुयोग्य होना आवश्यक है। जो माता–पिता और आचार्य शिष्य को उचित शिक्षा व ताड़ना करते हैं वे मानो अपनी सन्तान एवं शिष्य को अपने हाथों अमृत पिला रहे हैं। इसके विपरीत जो लाड़न करते हैं वे विष पिलाकर उनका जीवन नष्ट कर रहे हैं। — ***महर्षि दयानन्द सरस्वती***

काश! सभी भारतीयों को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होता तो आज स्वतन्त्र भारत के प्रशासक व नागरिक चरित्रवान होते और जघन्य पाप न होते। प्रत्येक का जीवन सुखी व सुरक्षित होता। सभी आर्यजनों से अनुरोध है कि अपनी सन्तानों हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित एवं 'टंकाराश्री' अरुणा सतीजा द्वारा लिखित बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश आज ही मंगवाएं। और अपनी सन्तानों को संस्कारवान बनाएं। **मूल्य मात्र 10/– रुपये।** वितरण करने हेतु न्यूनतम 100 प्रति खरीदने पर 20% की विशेष छूट। प्राप्ति हेतु आज ही सम्पर्क करें– **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली; मो. 9540040339**

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जन्मोत्सव पर द्वारका क्षेत्र यज्ञ की सुगन्ध से महका

वैदिक संस्कृति के महानायक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जन्मोत्सव 19 अप्रैल को पॉकेट 13 द्वारका के विशाल पार्क में 11 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ, शोभायात्रा, भजन संध्या एवं बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं लंगर के रूप में बड़ी धूम–धाम के साथ मनाया गया। ज्ञातव्य है कि दिल्ली की उपनगरी द्वारका में अभी तक कोई आर्यसमाज मन्दिर नहीं होते हुए भी पिछले 10 वर्षों से लगातार इस प्रकार के कार्यक्रम होते रहे हैं, जो आर्यसमाज स्थापना की भूमिका तैयार कर रहे हैं। क्षेत्र की सभी आर्यसमाजों के सहयोग एवं मार्गदर्शन से यह गतिविधियां चलाई जा रही हैं। इस कार्यक्रम में यज्ञ ब्रह्मा आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री ने सभी को राम के जीवन से प्रेरणा लेने का संकल्प दिलाया तथा एकजुट होकर कार्य करने पर बल दिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं निगम पार्षद श्री यशपाल आर्य ने नए परिवारों में सत्यार्थ प्रकाश वितरण किया तथा बच्चों को पारितोषिक एवं प्रमाण पत्र वितरित किए।

समारोह का आयोजन सत्य सनातन वैदिक संस्कृति के प्रचार में संलग्न संस्था भारतीय संस्कृति विकास परिषद् द्वारा किया गया। आर्यजनों से विनम्र निवेदन है कि द्वारका क्षेत्र में जो भी आर्य परिवार रहते हैं, कृपया उनकी सूचना श्री जीवन प्रकाश शास्त्री को मो. **9868072383** पर देने की कृपा करें, जिससे द्वारका में शीघ्र आर्यसमाज के निर्माण हेतु क्षेत्रीय आर्यजनों की समिति गठित कर इस कार्य को शीघ्र किया जा सके।

आर्यसमाज रतलाम द्वारा यज्ञ एवं प्रवचन

झाबुआ जिले के ग्राम नवापाड़ा, कालीरुण्डी तहसील थांदला में वृहत् यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम का आयोजन आर्य प्रचारक खेमचन्द्र आर्य की प्रेरणा से ग्राम के श्री देवलाजी द्वारा निर्मित हनुमान मन्दिर पर हुआ। यज्ञ में आए जोड़ों से आहुति दिलाई गई। इसके साथ ही आस–पास के ग्रामों से आए अनेक नर–नारियों ने गायत्री मन्त्र से आहुति दी। श्री खेमचन्द्र आर्य के प्रभाव से ग्राम के सरपंच श्री ज्योतिभाई डामोर एवं उनका परिवार जो पूर्व में जो ईसाई मनावलम्बी था, हिन्दू धर्म स्वीकार कर मन्दिर की स्थापना की गई।

कार्यक्रम पूरी रात्रि चला जिसमें आर्य प्रचारक सर्वश्री खेमचन्द्र आर्य, वर सिंह आर्य, मनसुख आर्य, एवं भाव सिंह आर्य के भजन हुए। रतलाम आर्य समाज के मन्त्री श्री राजेन्द्र बाबू गुप्त तथा श्री रेवती प्रसाद गुप्ता ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। – मन्त्री

'प्रेरणा दिवस' के रूप में मनाया जन्मोत्सव

परोपकारी समाजसेवी श्री सुरेश ग्रोवर जी का जन्मोत्सव आर्यसमाज करोल बाग, नई दिल्ली में 'प्रेरणा दिवस' के रूप में मनाया गया।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान् डॉ. महेश विद्यालंकार ने कहा कि सुरेश ग्रोवर वनवासी युवाओं व आर्यवीरों को चरित्र निर्माण शिविरों के माध्यम से प्रेरित करते व छात्रवृत्ति देकर उन्हें स्वाबलम्बी बनाते। वे सत्साहित्य, सेवा संस्कारों से दीक्षित करने में समर्पित रहे। समारोह में सुरेश ग्रोवर धर्मार्थ ट्रस्ट के प्रमुख श्री राकेश ग्रोवर, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने भी आर्यजनों को सम्बोधित किया।

– चन्द्रमोहन आर्य, पत्रकार

आर्य वीरांगना सशक्तिकरण शिविर

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद–हापुड़ एवं आर्य समाज हापुड़ द्वारा आयोजित आर्य वीरांगना सशाक्तिकरण शिविर के तृतीय दिन कन्या गुरुकुल सासनी की आचार्या गायत्री देवी ने बालिकाओं को संध्या व यज्ञ करना सिखाया तथा गीत के माध्यम से नैतिकता का पाठ पढ़ाया। इस अवसर पर डॉ0 प्राची आर्या ने बताया कि आज देश में भ्रष्टाचार कदाचार व्यभिचार बढ़ता ही जा रहा है। ईमानदार व्यक्ति का जीना समाज में दुर्लभ हो गया है। ये स्थिति क्यों हुई? क्योंकि हमने ऋषियों की, वेदों की शृंखला को छोड़ दिया है। आज व्यक्ति ने त्याग को छोड़ दिया है। भोग की ओर दौड़ रहे हैं। डॉ0 प्राची ने जोर दिया कि **तेन त्यक्तेन भुंजिथा** को जीवन में अपना लें तो व्यक्ति के जीवन से भ्रष्टाचार स्वयं खत्म हो जायेगा। **– मन्त्री**

अध्यापकों की आवश्यकता

श्री गुरु विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय, करतारपुर–144801, जिला–जालन्धर (पंजाब) को निम्नलिखित अध्यापकों की आवश्यकता है।

1. वेदाचार्य (वेद तथा संस्कृत एम.ए.)
2. साहित्याचार्य (एम.ए. संस्कृत)
3. व्याकरणाचार्य (एम.ए. संस्कृत)
4. दर्शनाचार्य (एम.ए. संस्कृत)
5. कम्प्यूटर टीचर

नोट – (क) आचार्य परीक्षा पास अध्यापकों को वरीयता दी जाएगी। (ख) सेवानिवृत्त संस्कृत विद्वान्/विदुषियां भी इस पद के लिए आवेदन भेज सकती हैं। (ग) वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा। (घ) आवेदन पत्र शीघ्रातिशीघ्र भेजे जाएं और आवेदन पत्र पर अपना मोबाइल नं. अवश्य दें। *– भूषण लाल शर्मा, प्राचार्य*

अष्टांग योग प्रायोगिक प्रशिक्षण शिविर 23 जून से 30 जून, 2013

स्थान : संस्कार भारती स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बगरु, अजमेर रोड, जयपुर। शिविर में पुरुष, युवक, माताएं एवं बहनें भी भाग ले सकती हैं। शिविर शुल्क 1000/– रुपये प्रति व्यक्ति है। शुल्क शिविर के पहले दिन शिविर स्थल पर 'महर्षि पतंजलि योग प्रचार ट्रस्ट (जयपुर) के नाम नकद जमा कराना होगा। शिविर में मात्र 200 शिविरार्थियें तक ही व्यवस्था की व्यवस्था होगी। अतः यथाशीघ्र पंजीकरण कराएं। शिविर समापन अन्तिम दिन दो बजे होगा। अतः आवश्यकतानुसार अपना आरक्षण (रेल/ बस/वायुयान) करा लवें। पंजीकरण एवं जानकारी हेतु (दोपहर 1 से 2 एवं रात्रि 9 से 10 बजे तक) सम्पर्क करें *– आचार्य सानन्द, 09984865 75, 8302212355,*

आर्य वीर दल फर्रुखाबाद का प्रशिक्षण शिविर

17 जून से 23 जून, 2013

शिविर आवासीय एवं निःशुल्क है। शिविरार्थी नित्य उपयोगी वस्तुएं साथ लाएं। पंजीकरण **9450018141, 9935083326** पर कराएं।

– सन्दीप कुमार आर्य, संचालक

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विद्यालय विभाग (हरिद्वार) उत्तराखण्ड 7 249404

प्रवेश सूचना

आधुनिक सुविधाओं सहित आवासीय विद्यालय (10+2) गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय–विभाग द्वारा हरिद्वार में सत्र 2013–17 हेतु कक्षा 1 से 9 व 11 तक प्रवेश प्रारम्भ हैं। वैदिक संस्कारों पर आधारित एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम सभी आधुनिक विषयों के साथ छात्रों के सर्वांगीण विकास की शिक्षण संस्था। विज्ञान वर्ग में **PCM** एवं **PCB** एवं **वाणिज्य वर्ग** तथा कला वर्ग। हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम। **प्रवेश 1 से 20 जुलाई, 2013** अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

– जयप्रकाश विद्यालंकार, सहायक मुख्याधिष्ठाता,
9927016872, 9412025930, 9412024149,
9690679382, 9927084378

Wec : www.gurukulkangrividyala.org

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों ने निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन शुल्क भेजें। इस कार्य का यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें अन्यथा **इस मास से आर्यसन्देश भेजना बन्द कर दिया जाएगा। वार्षिक शुल्क 250/– रुपये** तथा **आजीवन शुल्क 1000/– रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए सदस्य संख्या तथा पिनकोड अवश्य लिखें। – *सम्पादक*

शोक समाचार

श्री पन्ना लाल आर्य का निधन

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर (राजस्थान) के वरिष्ठ सदस्य श्री पन्नालाल आर्य जी का गत दिनों लगभग 63 वर्ष की अवस्था में अल्प बीमारी के पश्चात् निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में दिनांक 28 अप्रैल, 2013 को आर्यसमाज बीकानेर में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई, जिसमें प्रधान शंभूराम यादव, उप प्रधान श्री उदयशंकर व्यास, कोषाध्यक्ष श्री नरसिंह सोनी एवं श्री धर्मवीर असेरी ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार, 27 मई से रविवार, 2 जून, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 30/ 31 मई –2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 मई, 2013

प्रतिष्ठा में,

श्री.....

नीदरलैण्ड में यूरोपीय क्षेत्र की सबसे बड़े आर्यसमाज की स्थापना भवन निर्माण हेतु सहयोग की अपील

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लक्ष्य प्राप्ति के लिए नीदरलैंड में यूरोपीय क्षेत्र की सबसे बड़े आर्यसमाज मन्दिर की स्थापना की जा रही है। समस्त विश्व के आर्यसमाजों दानी महानुभावों से अपील है कि भवन निर्माण हेतु अपना सहयोग अवश्य प्रदान करें। सहयोग प्रदान करने हेतु सम्पर्क करें –

Arya Samaj Netherlands (ASAN)
Cartessiusstraat 47, 2562
SC The Hague (Netherlands)
Tel : 31+70-3451652
Email:info@asan-denhaag.nl
Web : www.asan-denhaag.nl

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10, 20 किलो की पैकिंग)

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

बालिकाओं का व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

दिनांक 20 जून से 26 जून

समय प्रात: 8 से 12 बजे

स्थान : इण्डोर स्टेडियम, पटेल मैदान, अजमेर (राजस्थान)

भाग लेने के लिए सम्पर्क करें – साध्वी डॉ. उत्तमायति, संचालिका मो0 9672286863

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

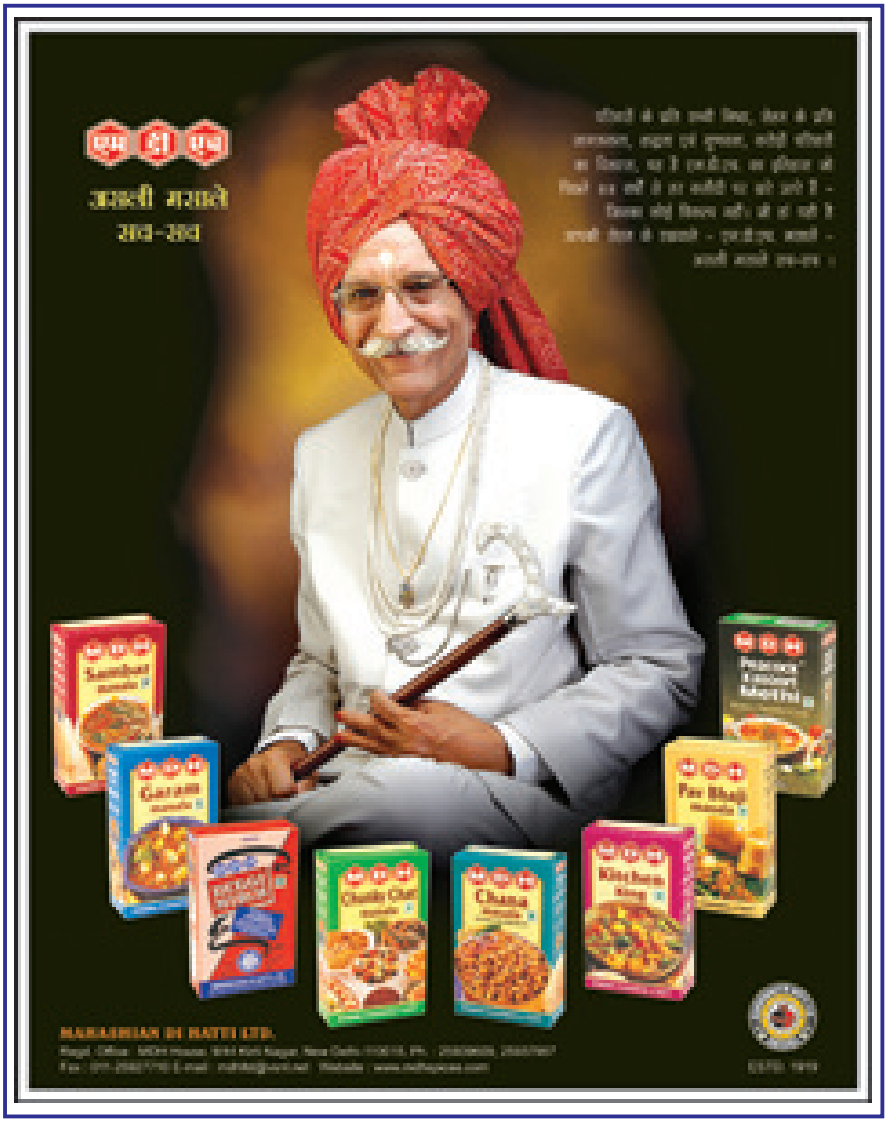

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर